

सामाजिक विज्ञान शिक्षण के दौरान बुनियादी साक्षरता पर काम

कल्पना बिष्ट

उच्च प्राथमिक कक्षाओं में कुछ विद्यार्थी ऐसे होते हैं जिनमें बुनियादी साक्षरता से सम्बन्धित अपेक्षित दक्षताएँ कमजोर होती हैं। ऐसे विद्यार्थियों के साथ यदि बुनियादी साक्षरता पर कार्य न किया जाए तो उनका कक्षा में बने रहना चुनौती बन जाता है। ऐसे विद्यार्थियों के साथ विषय शिक्षण के दौरान बुनियादी साक्षरता पर काम करने के अनुभव इस लेख में साझा किए गए हैं।



चित्र 1: महाद्वीपों पर बात करते हुए नई शब्दावली से परिचय (एआई के सहयोग से बना चित्र)

सामाजिक विज्ञान के कालखण्ड में एक अलग तरह की चुप्पी होती है। यह डर या अनुशासन से उपजी चुप्पी नहीं, बल्कि वह चुप्पी होती है जिसमें विद्यार्थी नए विषय को समझने की कोशिश कर रहे होते हैं। मेरी कक्षा 6 में एक नए विद्यार्थी का आना हुआ। शुरुआती परिचय और कक्षा में उसके प्रतिभाग को कुछ दिन देखने के बाद समझ आया कि उसको पढ़ने-लिखने में समस्या हो रही है। इस नए विद्यार्थी को मिलाकर मेरी कक्षा में कुल 14 विद्यार्थी हो गए हैं। इनमें से 2 को पढ़ने-लिखने में दिक्कतें हैं। मैंने पाठ्यक्रम में आगे बढ़ते हुए दूसरा अध्याय 'महासागर एवं महाद्वीप' पढ़ाना शुरू किया। उस समय यह बात मुझे स्पष्ट थी कि यदि केवल पाठ्यपुस्तक के सहारे आगे बढ़ी तो ये दोनों विद्यार्थी धीरे-धीरे कक्षा से बाहर हो जाएँगे। इसलिए कोशिश की कि अध्याय और शिक्षण सामग्री

सबके लिए एक ही रहे, पर उसके आधार पर विद्यार्थियों के स्तर को समझने, और उनके साथ काम करने के रास्ते अलग-अलग बनाए जाएँ।

कक्षा की शुरुआत पुस्तक खोलने से पहले की। मैंने बोर्ड पर एक बड़ा-सा गोला बनाया, और विद्यार्थियों से पूछा, "अगर यह पृथ्वी है तो इसमें हम क्या-क्या दिखाएँगे?" वे तुरन्त रंगों की बात करने लगे—नीला, भूरा, हरा। यहीं से बातचीत आगे बढ़ी। मैंने कुछ विद्यार्थियों को पृथ्वी के गोले में नीला रंग भरने को कहा और कुछ को भूरा। बुनियादी साक्षरता में कमजोर विद्यार्थियों को पास बुलाकर धीरे से कहा, "यह पानी है... यह ज़मीन है... तुम दिखाओ कहाँ पानी है?" वे उँगली से इशारा करते, फिर उसी को दोहराते। वहीं दूसरी ओर, बाक़ी विद्यार्थियों से पूछा, "अगर नीला हिस्सा ज़्यादा है तो इसका क्या मतलब हुआ?" धीरे-धीरे

वे इस निष्कर्ष तक पहुँचे कि पृथ्वी पर पानी अधिक है। एक ही सामग्री व गतिविधि में कुछ विद्यार्थी रंग और शब्द से जुड़ रहे थे, वहीं कुछ उसी से तर्क गढ़ रहे थे।

जब हमने 'महासागर' और 'महाद्वीप' शब्दों पर काम शुरू किया, तब जल्दबाजी में उनके अर्थ नहीं बताए। मैंने विद्यार्थियों से कहा कि वे पुस्तक में ये शब्द ढूँढ़ें। बुनियादी साक्षरता स्तर से नीचे के विद्यार्थी पहले पन्ने पलटते रहे, और थोड़ा असमंजस में दिखे। फिर मैं उनके पास बैठी, और एक बार 'महासागर' शब्द पर उँगली रखकर कहा, "यह 'महासागर' है, इसे पहचानो!" इसके बाद उन्हें वही शब्द पूरे अध्याय में ढूँढ़ने और जहाँ-जहाँ मिले, वहाँ पेंसिल से नीचे रेखांकित करने को कहा। धीरे-धीरे वे अक्षरों और शब्द की बनावट से उसे पहचानने लगे, और हर बार मिलने पर उसे चिह्नित करते गए।

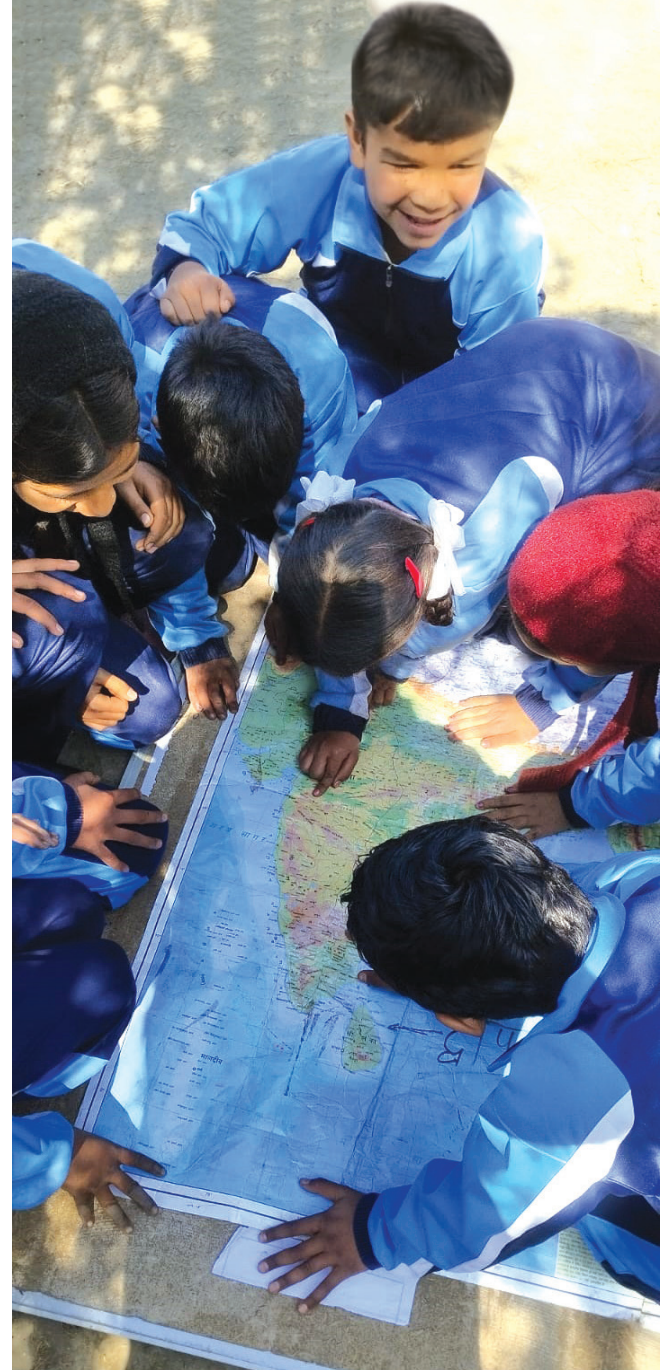
जब वे 'महासागर' पहचान में थोड़ा सहज हुए, उनके काम को छोटा-सा विस्तार दिया। उनसे कहा, "जो शब्द 'म' से शुरू होते हैं, उन्हें भी ढूँढ़ो!" अब वे केवल 'महासागर' तक सीमित नहीं रहे, बल्कि 'महाद्वीप', 'मानचित्र' जैसे अन्य शब्द भी देखने लगे। इससे उनके लिए अक्षरों की पहचान और शब्दों के पैटर्न को समझना एक खेल जैसा बन गया।

उसी समय, कक्षा के बाक्री विद्यार्थियों से पूछा, "महासागर और महाद्वीप में क्या अन्तर हो सकता है?" कुछ विद्यार्थियों ने अपने अनुभव से कहा, "समुद्र पानी होता है"; "महाद्वीप ज़मीन है।" इस तरह एक ही गतिविधि में बुनियादी साक्षरता वाले विद्यार्थी शब्दों को खोजने, पहचानने और चिह्नित करने की प्रक्रिया से गुज़र रहे थे, जबकि अन्य उसी सामग्री के आधार पर शब्दों के अर्थ और अन्तर समझने की दिशा में आगे बढ़ रहे थे। इसी तरह, अगले अध्याय पर बढ़ते हुए हमने पिछले अध्याय की तरह तालिका में 'शब्दों की दीवार' बनाई। यह प्रक्रिया प्रत्येक अध्याय के साथ आगे बढ़ती है जिसमें अध्याय में आए या सीखे गए नए शब्दों को विद्यार्थी तालिका में इस तरह आगे बढ़ाते हैं—

शब्द	अर्थ	वाक्य
महासागर	पृथ्वी की सतह पर विस्तृत जलाशयों को महासागर कहा जाता है।	महासागर तरह-तरह के जीव-जन्तुओं का घर है।
महाद्वीप		

मानचित्र के साथ काम करते समय यह भी स्पष्ट हुआ कि पढ़ना केवल अक्षरों या शब्दों को पढ़ना नहीं है। मैंने फ़र्श पर एक साधारण मानचित्र बनाया, और विद्यार्थियों को उसके चारों ओर बैठाया। बुनियादी साक्षरता वाले विद्यार्थियों से कहा, "नीला ढूँढ़ो... यह क्या है?" वे 'पानी' कहते हुए उसे छूते। फिर उन्हें 'भारत' शब्द दिखाया और उन्हें ढूँढ़ने को कहा। वे धीरे-धीरे अक्षरों को पहचानते हुए उस शब्द तक पहुँचे। वहीं दूसरी ओर, अन्य विद्यार्थियों से पूछा, "कौन-सा महासागर सबसे बड़ा है, यह कैसे पता चलेगा?" वे मानचित्र को देखकर तुलना करने लगे, कुछ ने पुस्तक से मिलान किया, कुछ ने अपने तर्क दिए।

कक्षा में बातचीत धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी थी। जब हमने 'महासागर और जीवन' पर चर्चा की तब विद्यार्थियों से सीधा सवाल नहीं पूछा। केवल इतना कहा, "अगर कल से बारिश बन्द हो जाए तो क्या होगा?" कुछ विद्यार्थी तुरन्त बोलने लगे, "पानी खत्म हो जाएगा, खेती नहीं होगी।" बुनियादी साक्षरता वाले विद्यार्थी पहले चुप रहे। फिर जब उनसे पूछा, "पानी होगा या नहीं?" तब उन्होंने धीरे से कहा, "नहीं होगा।" मैंने उसी जवाब को पकड़कर बातचीत को आगे बढ़ाया। बाक्री विद्यार्थियों से कारण और परिणाम बताने को कहा, जबकि बुनियादी साक्षरता वाले विद्यार्थियों को संक्षेप में अपनी बात कहने के लिए प्रोत्साहित किया।



चित्र 2 : मानचित्र में नीले को ढूँढ़ते हुए महासागर की पहचान करते विद्यार्थी



“ यदि हम कक्षा को इस तरह रचें कि हर विद्यार्थी को सोचने, बोलने और लिखने का समय व अवसर मिले, तब कोई भी अध्याय धीरे-धीरे सभी विद्यार्थियों के लिए अर्थपूर्ण बन जाता है। ”

चित्र 3 : नई शब्दावलिओं के परिचय से समझ का विस्तार करते विद्यार्थी

लेखन के समय भी यह ध्यान रखा कि सभी से एक जैसा काम न लिया जाए। जब विद्यार्थियों से कहा गया कि वे महासागर के बारे में लिखें तब कुछ विद्यार्थियों ने 3-4 वाक्य लिखे, जबकि बुनियादी साक्षरता पर काम करने वाले विद्यार्थियों को मैंने पुस्तक से एक पंक्ति ढूँढ़कर लिखने, या चित्र बनाकर उसके नीचे एक शब्द लिखने को कहा। वे धीरे-धीरे अक्षर जोड़ते, शब्द बनाते, और लिखने का प्रयास करते। यह लेखन भले छोटा था, पर उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण था क्योंकि यह उनके अपने प्रयास से आया था।

पूरे अध्याय के दौरान महसूस किया कि सीखना तब गहराता है जब विद्यार्थियों को समय दिया जाता है—किसी शब्द पर रुकने का, उसे पहचानने, बोलने, और फिर उसे समझने का। एक ही विषय पर काम करते हुए बार-बार लौटना, किसी शब्द को अलग सन्दर्भ में देखना, किसी विचार को अलग तरीके से समझना, यही वह प्रक्रिया थी जिसने बुनियादी साक्षरता से जुड़े विद्यार्थियों को भी कक्षा में बनाए रखा।

अब वे दोनों विद्यार्थी, जो शुरुआत में केवल चुप रहते थे, कभी-कभी खुद से शब्द ढूँढ़ लेते हैं, किसी चित्र को देखकर कुछ कह देते हैं, या एक छोटा-सा वाक्य लिखने का प्रयास करते हैं। यह बदलाव बहुत बड़ा नहीं दिखता, लेकिन कक्षा के भीतर यह एक महत्वपूर्ण क्रम है। यदि हम कक्षा को इस तरह रचें कि हर विद्यार्थी को सोचने, बोलने और लिखने का समय व अवसर मिले, तब कोई भी अध्याय धीरे-धीरे सभी विद्यार्थियों के लिए अर्थपूर्ण बन जाता है। सामाजिक विज्ञान यदि केवल प्रश्नोत्तर और रटन्त तथ्यों तक सीमित रह जाए तो बुनियादी साक्षरता की प्रक्रिया वहीं ठहर जाती है। लेकिन यदि इसे अनुभव, कल्पना और चिन्तन से जोड़ा जाए तो वही विषय विद्यार्थियों की बुनियादी क्षमताओं को गहराई देता है। सामाजिक विज्ञान विद्यार्थियों को समाज से जोड़ता है, और बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान उन्हें उस समाज को समझने और अभिव्यक्त करने की क्षमता देता है। एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकें इस दृष्टि से अपार सम्भावनाएँ समेटे हुए हैं।



कल्पना बिष्ट विगत 7 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में काम कर रही हैं। वे उत्तराखण्ड में चमोली के कर्णप्रयाग ब्लॉक में कार्यरत हैं, और मुख्यतः सामाजिक विज्ञान विषय में काम करती हैं।

सम्पर्क : kalpana.bisht@azimpremjifoundation.org